

घरेलू और देखभाल कामों का भारत में डिजिटल मध्यस्थता

कार्यकारी सारांश

इस शोध के बारे में

यह परियोजना भारत में देखभाल और घरेलू कार्य के क्षेत्र में ऑनलाइन एजेंसियों के आने का अध्ययन करती है। हम पाते हैं कि ऑनलाइन एजेंसियां असमान शक्ति के ढांचों पर भरोसा करते हैं और बढ़ावा देते हैं, जिसे मजदूर वर्ग पहले से ही अनुभव कर रहे हैं। हम इन प्लेटफार्म के तौर-तरीकों की आलोचनात्मक विश्लेषण करने के लिए एक नारीवादी दृष्टिकोण (नजरिया) और मौलिक रूप से अलग-अलग बदलती हुई प्लेटफॉर्मों (प्लेटफॉर्मिज़ेशन) का, श्रमिक-प्राथमिकता (मजदूरों को ध्यान) में रखने वाले तरीका अपनाते हैं।

संस्था और शोध दल के बारे में

इसे सेंटर फॉर इंटरनेट एंड सोसाइटी द्वारा पोषित किया गया, शोध का नेतृत्व अंबिका टंडन और आयुष राठी ने किया, जिसमें सुमांद्रो चट्टापाध्याय ने योजना, संपादकीय और परियोजना प्रबंधन संबंधी सहायता प्रदान की। आयुष प्रशिक्षण से एक वकील हैं, और पिछले कुछ वर्षों से श्रम, लिंग और प्रौद्योगिकी का अन्तर्विषयी अध्ययन कर रहे हैं। अंबिका ने मीडिया अध्ययन में प्रशिक्षण लिया है, और 2018 से CIS में नारीवादी शोध के विकास का नेतृत्व कर रही है। सुमांद्रो, CIS के निदेशक के रूप में, सूचना तक पहुँच, डेटा नियंत्रण और डिजिटल अर्थव्यवस्था पर अकादमिक एवं लोक-नीति शोध में योगदान दिए हैं।

घरेलू कामगार अधिकार संघ साथी शोधकर्ताओं के रूप में परियोजना को लागू करने में हिस्सेदार था। DWRU की प्रमुख गीता मेनन कर्नाटक में असंगठित क्षेत्र के मजदूरों के साथ ही, पिछले तीन दशकों से नारीवादी संगठन के साथ जुड़ी रही हैं। शोध दल में पारिजात जीपी, राधा कीर्तन, ज़ीनथुन्निसा और सुमति शामिल थे, जो संगठन में पद पर हैं या थे, जहाँ वे श्रमिकों को संगठित करने और उनकी समस्याओं को बाहर लाने एवं उसके हल करने के लिए जिम्मेदार हैं या थे।

शोध से बाहर आयी कहानियां

कहानी 1: राधा, रोज के कामों में होने वाले जाति आधारित भेदभाव के संदर्भ में

हमने जमीनी स्तर के कार्यकर्ताओं और आयोजकों के साथ मिलकर शोध पद्धतियों की रूपरेखा तैयार किया और लागू करने के लिए सजातीय-विज्ञान के विधियों और नारीवादी सिद्धांतों को अपनाया। घरेलू कामगारों के जीवन में, संगठन के शोधकर्ताओं का जुड़े रहने से शोध के नजरिया और परिणामों को महत्वपूर्ण आकार मिला। इसने शुरू से ही जमीनी स्तर के प्रबंधकों/शोधकर्ताओं के उद्देश्यों, शोध विषयों और परिणाम को एक साथ लाकर के परियोजना को समृद्ध किया, और मजदूरों के अनुभवों तथा दृष्टिकोणों की समझ में रही हमारी कमियों को पहचानने में हमारी मदद की। उदाहरण के लिए, मजदूरों द्वारा सामना किए जा रहे जातिगत भेदभाव के बारे में सीधे पूछने के बजाय, राधा ने सुझाव दिया कि रोजगार संबंधों में हर दिन के कामकाज में इसके (जातिगत भेदभाव) प्रभाव के बारे में पूछें। यह मजदूरों को दिए जाने वाले अलग बर्तन के रूप में हो सकता है, या मजदूरों को अपने मालिकों से अलग लिफ्ट या सीढ़ियां चढ़ने के लिए कहा जा सकता है। ये सुझाव मजदूरों, उनके मालिकों और प्लेटफार्मों के बीच गैर-बराबरी के संबंधों को सामने लाने में अत्यंत महत्वपूर्ण रही, अगर ऐसा न होता तो यह उन शोधकर्ताओं के लिए छिपी बात रहती, जिन्हें इस क्षेत्र के भीतर के परिस्थितियों के बारे में समझ एवं ज्ञान नहीं था।

कहानी 2: एकता में, एक साथ शोध

ऐसे कई उदाहरण थे जिन्होंने शोध के महत्व को दिखाया, जो हस्तक्षेपवादी भी है और प्रतिभागियों के

साथ वास्तविक संबंध की एकता को बनाते हैं, हमने शोधकर्ताओं और प्रतिभागियों के बीच एक निष्पक्ष और समान दूरी बनाएँ रखने के जो वस्तुनिष्ठ मानदंड हैं, उससे विपरीत प्रतिभागियों के साथ वास्तविक संबंध की एकता को बनाया। एक उदाहरण, ज़ीनथुत्रिसा और अंबिका ने सीमा नामक एक कार्यकर्ता के साथ एक साक्षात्कार (बातचीत) की तैयारी की, जिस तक पहुंचने के लिए जानकारी उन्हें एक प्लेटफॉर्म के माध्यम से मिली। सीमा बेंगलुरु में एक सफाई कर्मी और रसोइया थी, जहाँ वह दो दशक पहले अपने पैतृक स्थान असम से प्रवासी के तौर पर आई थी। वह हिन्दी और असमिया बोलती थी। वह शुरू में शोधकर्ताओं से बात करने में बहुत झिझक रही थीं, और उसे डर था कि उसके द्वारा दी गई कोई भी जानकारी उन नियोक्ताओं (प्लेसमेंट एजेंसियों) तक पहुंच जाएगी, जिनके साथ उसने पहले काम किया था। शोधकर्ताओं ने उसकी बेटी को फोन पर शोध के उद्देश्यों के बारे में बताया, जिसने फिर उसे अध्ययन में भाग लेने के लिए मना लिया। साक्षात्कार के दौरान, सीमा ने शोधकर्ताओं के सामने वेतन-चोरी और बंधुआ मजदूरी सहित मालिकों (प्लेसमेंट एजेंसियों) के हाथों शोषण के दुःखद अनुभवों के बारे में बताया। उसने यह भी बताया कि जिस प्लेटफॉर्म पर उसने पंजीकरण कराया था, उसने ऐसी कोई भी गैरकानूनी गतिविधि नहीं की थी, लेकिन उस समय तक उसका काम खोजने में भी कोई महत्वपूर्ण भूमिका नहीं निभाई थी। सीमा जिन समस्याओं का सामना कर रही थी, जैसे कि एक नियोक्ता संस्था (प्लेसमेंट एजेंसी) ने उसके पहचान दस्तावेजों को बलपूर्वक ले लिया था, ऐसे समस्याओं का लगातार यूनियन द्वारा समाधान किया गया। साक्षात्कार के बाद ज़ीनथुत्रिसा सीमा के संपर्क में बनी रही, और यूनियन के समर्थन से राज्य सरकार से जारी नई पहचान-पत्र दिलवाने सहित अलग-अलग समस्याओं को हल करने में उसकी मदद की।

कहानी 3: कोविड-19 के समय में असंगठित क्षेत्र (Gig) और घरेलू मजदूरों की मांगों का समर्थन करना

हमें इस शोध के दौरान ही कोविड-19 के प्रभाव से जूझना पड़ा था (और जूझते रहे हैं)। इस शोध प्रक्रिया में सुझाव प्रक्रिया (फीडबैक लूप) के साथ, हम उन चुनौतियों से अच्छी तरह परिचित थे, जिनसे घरेलू कामगारों, असंगठित क्षेत्र के कामगारों और उनके संगठनों के विभिन्न वर्ग जूझ रहे थे। अचानक और सम्पूर्ण तालेबन्दी के बाद, व्यापक स्वास्थ्य संकट के बीच मजदूर बेरोजगारी की स्थिति में छोड़ दिए गए। आवागमन और "दो व्यक्तियों के बीच दूरी" नियम के साथ, संगठन भी संघर्ष कर रहे थे। ए.पी.सी के प्रोत्साहन से, हम भारत में कई सामाजिक संगठनों के कार्यकर्ताओं के साथ काम करने में सक्षम हुए ताकि काम करने के तरीकों और सुझावों के एक दस्तावेज (चार्टर) को तैयार किया जा सके, जिसमें विशेष गतिविधियों को शामिल किया जाए, जिसे सार्वजनिक और निजी कार्यकर्ता द्वारा कमजोर असंगठित श्रमिकों की आर्थिक और सामाजिक भलाई की रक्षा के लिए लागू किया जा सके। इससे सरकारी संस्थाओं के भीतर और प्लेटफ़ॉर्म कंपनियों का भी ध्यान गया, और हमें सरकार के सहायता पैकेज विकसित करने में अर्ध-सरकारी निकायों के साथ सलाह-मशविरा करने वाले समूहों से सवाल मिले। हम बेंगलुरु में घरेलू कामगार समूहों को साक्ष्य जुटाने के कामों में भी मदद करने में भी सक्षम हुए। इसके माध्यम से, हमने घरेलू कामगारों के बीच अचानक बढ़े बेरोजगारी के पैमाने, और उनके जीवनयापन के संघर्षों को जानने और लिखने का मौका मिला और इसे दस्तावेज के रूप में बना सके। यह कर्नाटक राज्य में श्रम अधिकारियों द्वारा सकारात्मक रूप से स्वीकार किया गया, और समूहों को राज्य सरकार से आपातकालीन आर्थिक सहायता के लिए एक आश्वासन भी मिला।

शोध प्रश्न, तर्क और उद्देश्य

भारत में असंगठित क्षेत्र के कार्यों में सर्वाधिक महिलाएँ हैं, खासतौर पर हाशिए पर स्थित जाति और वर्ग के अंतर्गत होने वाली भेदभाव से प्रताड़ित महिलाएँ। खासतौर से घरेलू काम को ऐतिहासिक रूप से जाति और लिंग के आधार पर बाँटा गया है। डिजिटल प्लेटफॉर्म तेजी से इस क्षेत्र में बिचौलिया बनते जा रहे हैं, जो निम्न वर्गों के तथाकथित 'अर्ध-कुशल' या 'कम-कुशल' श्रमिकों को टियर-1 शहरों के लाखों मध्यम और उच्च वर्ग के नौकरी देने वालों से मिलाने वाली बीच की कड़ी बन रहे हैं। इससे यह अपेक्षा की जा रही है कि श्रमिकों के संगठन और रोजगार संबंधों के बीच से गंभीर बदलाव होंगे। नारीवादी दृष्टिकोण के माध्यम से डिजिटल श्रम, हमारी परियोजना का उद्देश्य घरेलू या जनन संबंधी देखभाल कार्य में प्लेटफार्मों का अलग-अलग नज़रिये से जांच-पड़ताल करना है।

हमारा शुरुआती अनुमान यह था कि ये प्लेटफॉर्म मजदूरों की स्थितियों में बदलाव ला रहे हैं, जो प्लेटफॉर्म के गैर-मानक कार्य से गुणात्मक रूप से, अलग-अलग तरीकों से मजदूरों को या तो सशक्त या श्रमिकों का शोषण कर सकता है। इस पर और पड़ताल करने के लिए, हमने काम से जुड़े कई पहलुओं का अध्ययन किया, जिसमें मजदूरी, काम की शर्तें, सामाजिक सुरक्षा, कौशल स्तर और प्लेटफॉर्म द्वारा मजदूरों की निगरानी शामिल है।

अपने अध्ययन के माध्यम से, हमने देखभाल और जनन संबंधित कार्य में बिचौलिया रूपी प्लेटफॉर्म के लिंग, वर्ग और जाति संबंधों के संदर्भ में सम्मिलित रूप को सामने रखा। इसमें अन्य तरीकों के अलावा, प्लेटफार्मों और मालिकों द्वारा की जाने वाली मजदूरों की निगरानी के ऑनलाइन और ऑफलाइन तरीके शामिल हैं। हमने सामूहिक समझौतों और संगठन की रणनीतियों पर भी विशेष ध्यान दिया है, जो असंगठित क्षेत्र में जनन और देखभाल कार्य के संदर्भ में विकसित हुई हैं, और जो प्लेटफॉर्म की अर्थव्यवस्था को पुनः फिर से बना रही हैं। हमने सामूहिक सौदेबाजी और संगठन की रणनीतियों पर भी विशेष ध्यान दिया है जो अनौपचारिक क्षेत्र शिशु जनन और देखभाल के कार्य के संदर्भ में विकसित हुई हैं, और ऑनलाइन एजेंसियों के अर्थव्यवस्था को उनके लिए पुनः संयोजित कर रही हैं।

इस परियोजना के जरिए हमने ग्लोबल साउथ में प्लेटफॉर्मिजेशन और घरेलू काम के इर्द-गिर्द होने वाले विकास के लिए आधारभूत कार्यों के ढांचों को बनाने की मांग की है। ऐसा करते हुए, हम ऐसे साक्ष्य जुटाना चाहते थे जो इस क्षेत्र में शोध के नजरिया को मूल रूप से बदल दें। हमने महिलाओं के दयनीय कामों पर ध्यान केंद्रित करके, प्लेटफॉर्म के साथ काम करते हुए उनके अनुभवों की चर्चा में मजदूरों को केंद्र में रखकर, और वकालत, नीति और अकादमिक कार्यों को आपस में मिलाते हुए ऐसा किया। हम बदलाव के लिए नीचे से शुरू करके ऊपर तक पहुँचने की प्रक्रिया को अपनाते हैं। आसानी से उपलब्ध और प्रयोग करने योग्य संसाधनों को विकसित करके, हमने परियोजना के खत्म होने के बाद परिवर्तन की दिशा में किए गए प्रयासों को बनाए रखने के लिए श्रमिक समुदायों को सशक्त बनाने की मांग की है।

डेटा संग्रह और विश्लेषण के नारीवादी तरीके

हमने डेटा संग्रह के लिए एक नारीवादी वंशानुक्रम विज्ञान का तरीका अपनाया। जून से नवंबर 2019 के बीच, हमने मुख्य रूप से नई दिल्ली और बेंगलुरु में 65 गहन अर्ध-निर्धारित साक्षात्कार (Interview) किए। इनमें से ज्यादातर घरेलू कामगार वे थे जो प्लेटफार्म के माध्यम से काम की तलाश कर रहे थे या उन्हें काम मिल गया था।

हमने अपने निष्कर्षों की तुलना करने के लिए पारंपरिक प्लेसमेंट एजेंसियों के माध्यम से काम करने वाले मजदूरों और प्लेटफार्मों, सरकारी श्रम विभागों और मजदूर समूहों के प्रतिनिधियों के साथ साक्षात्कार भी किया। हमने जिन श्रमिकों का साक्षात्कार किया, उनमें ज्यादातर महिलाएं थीं, लेकिन पुरुषों को भी शामिल किया गया था।

यह नई दिल्ली में साक्षात्कार लेखकों द्वारा किए गए, जबकि बेंगलुरु में मजदूरों के साथ साक्षात्कार वहाँ के जमीनी स्तर के कार्यकर्ताओं द्वारा किए गए, जो घरेलू कामगार अधिकार संघ (DWRU) से संबंध रखते थे। उनके लिए यह औपचारिक शोध और डिजिटल प्लेटफॉर्मिजेशन के अध्ययन में पहला अनुभव था। डेटा संग्रह नजरियों को लागू करने के लिए, हमने अंतर वर्गीय, स्वतःज्ञात्य, और भागीदारी के नारीवादी पद्धति के सिद्धांतों का प्रयोग किया। यह कार्य प्रणाली उस दृष्टिकोण पर आधारित है, जो हाशिए के समूहों के जीवन के अनुभवों को केंद्र में रख कर सूचना के नए निर्माण को बढ़ावा देती है।

हम निम्न आय वर्ग के दलित, बहुजन और आदिवासी महिलाओं के वर्चस्व वाले क्षेत्र का अध्ययन करते हुए सवर्ण शोधकर्ताओं के रूप में अधिक आय के रूप में अपनी स्थिति के बारे में पूरी तरह से अवगत थे। परियोजना के दौरान डीडब्ल्यूआरयू (DWRU) को शामिल करके इस गैरबराबरी के अंतर को थोड़ा कम करने की कोशिश की थी। शोध किए गए दोनों जगहों पर काम करने वालों का साक्षात्कार (इंटरव्यू) उन्ही की भाषा में जिनमें वे सहज महसूस करते थे, अर्थात हिंदी, कन्नड़ और तमिल और उनके परिचित स्थानों में जैसे अक्सर उनके घरों में किया गया।

डेटा विश्लेषण के दौरान नारीवादी सिद्धांत भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिसमें अंतर्वर्गीय और स्वतःज्ञात्य तथ्यों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। हमने यह जानने का प्रयास किया कि प्लेटफॉर्म की अर्थव्यवस्था में लिंग, आय, प्रवास की स्थिति, जाति और धर्म की असमानताओं को दोहराने और बढ़ाने के लिए किन तरीकों का प्रयोग होता है। विशेष रूप से, हमने आर्थिक अवसरों को खोजने के लिए मजदूरों की अवसर तक पहुंच की क्षमता और कौशल के डिजिटल परिवेश में लिंग आधारित अंतर के प्रभाव पर चर्चा की।

कई लोग जिनका इंटरव्यू किया गया उनको अपने व्यक्तिगत तथ्यों को साझा करने के बाद शोधकर्ताओं के हाव-भाव से खुद के लिए हीन भाव महसूस हो उससे पहले ही इस स्थिति से बचने के लिए, और अपने शोध को लोगों तक पहुंचाने के लिए, श्रमिकों और यूनियनों के साथ एक फीडबैक तंत्र को भी विकसित किया और उपयोग में लाया। यह एक आसानी से उपलब्ध सूचनाओं के संसाधनों के विकास के माध्यम से किया जा रहा है जिसका मकसद श्रमिकों को डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से और काम की तलाश करते समय विकल्प की पूरी सूचना उपलब्ध बनाने में सक्षम बनाना है।

नैतिक ढांचा

एक नारीवादी दर्शनशास्त्र, "कहीं से भी" निष्पक्ष ज्ञान की सूचना पर यह दावा करते हुए सवाल करता है कि सभी सूचनाएँ एक किसी खास संदर्भ में बनाया और प्राप्त होते हैं। एक 'निष्पक्ष' परिप्रेक्ष्य खुद से ही होता है, या उन सामाजिक समूहों का होता है जिनका वर्चस्व होता है, जो हाशिए की पहचान के परिप्रेक्ष्य से अर्जित सूचनाओं के गैर-मानक रूपों को अवैध बनाता है। ऐसे वस्तुवादी तरीकों से बचने के लिए, हमारी कार्यप्रणाली का लक्ष्य, जहां तक संभव हो, दोहरे या तिहरे हाशिए वाले मजदूरों के 'नजरिए' से शोध को उनके साथ मिलकर करना है। मजदूरों और यूनियनों के अलावा, हमने कंपनियों और सरकारी हितधारकों का भी साक्षात्कार लिया। सत्ता और संसाधनों तक अलग-अलग पहुंच रखने वाले हितधारकों के नजरियों को जोड़कर, हम प्लेटफॉर्म अर्थव्यवस्था के कामकाज के प्रमुख और वैकल्पिक बातों में विभिन्न विरोधाभासों को सामने लाने में सक्षम थे। इसके लिए कभी-कभी मजदूरों और कंपनियों द्वारा उठाए गए कदमों के बीच फेरबदल करने की आवश्यकता होती है, जिसे हमने प्लेटफॉर्म-अर्थव्यवस्था के प्रतिनिधियों द्वारा पेश किए गए प्लेटफॉर्म पर 'स्वच्छ' दृष्टिकोण के ऊपर श्रमिकों के रहन-सहन के बारे में अनुभवों को भी संबोधित किया।

हमें कर्मचारियों से जोड़ने के लिए कंपनियों से संपर्क करने के परिणामस्वरूप हमें नैतिक चुनौतियों का भी सामना करना पड़ा। ऐसा करने के हमारे अनुरोधों के बावजूद, हमने जिन कंपनियों से संपर्क किया, उनमें से केवल दो ने अपनी जानकारी साझा करने से पहले मजदूरों की सहमति ली जो शोध में सहमति और प्लेटफॉर्म के द्वारा जानकारी के मनमाने उपयोग के बारे में नैतिक प्रश्न उठाती है। हमने इसे आंशिक रूप से यह सुनिश्चित करके संबोधित किया कि सभी मजदूरों को शोध के बारे में पर्याप्त जानकारी दी गई थी, जिसमें उद्देश्य और निष्कर्ष शामिल थे, और जब भी उन्हें आवश्यकता महसूस हो, तो उनसे बात करने से पहले बातचीत से बाहर जाने का विकल्प दिया गया था।

बहुत कम मामलों में, हमने सीधे तौर पर कुछ मजदूरों को भी रखा जो इस शोध से नहीं जुड़े हुए थे। हमने मजदूरों की संपर्क जानकारी की एक निश्चित संख्या तक पहुंच के लिए बाजार प्लेटफॉर्म और डिजिटल प्लेसमेंट एजेंसियों के साथ काम देने वाले (सशुल्क सदस्यता के माध्यम से) के रूप में पंजीकृत किया, और हम मजदूरों के साथ पारदर्शी थे कि हमने उनकी जानकारी किस तरह से प्राप्त की। हमने ऑन-डिमांड प्लेटफॉर्म के माध्यम से एक बार की सफाई सेवा के लिए दो कर्मचारियों को नियुक्त किया। प्लेटफॉर्म द्वारा निर्धारित किए गए मजदूरी के अनुसार दोनों श्रमिकों को उनके काम के लिए मजदूरी दिया गया था। हमने काम पूरा होने और उनके भुगतान की प्राप्ति के बाद यह जांचने के लिए उनसे संपर्क किया कि क्या वे परियोजना में भाग लेने के इच्छुक होंगे, यह सुनिश्चित करते हुए कि उनपर भाग लेने का कोई दबाव नहीं है। दोनों मजदूर सहमत हुए और उन्हें DWRU से संपर्क कर इंटरव्यू की व्यवस्था की।

शोध निष्कर्षों के बारे में चर्चा

प्लेटफॉर्म संरचनाओं की विविधता और महत्व

हमारी प्लेटफॉर्म प्रकारों को चिन्हित करने का तरीका (टाइपोलॉजी) घरेलू काम में बिचौलिया प्लेटफॉर्मों की तीन प्रकार पाती है- (i) बाजार, या प्लेटफॉर्म, जो मजदूरों के डेटा को उनके परिचय-प्रोफाइल पर सूचीबद्ध करते हैं, कई मजदूरों को समूह में स्वचालित चयन के लिए कुछ तकनीक द्वारा वर्गीकरण के तरीके (फ़िल्टर) प्रदान करते हैं, और मजदूरों से संपर्क करने के जानकारियों को मुहैया कराने के लिए ग्राहकों से शुल्क लेते हैं। (ii) डिजिटल प्लेसमेंट एजेंसी, या प्लेटफॉर्म, जो ग्राहकों को शुरू से अंत तक नौकरी में सहयोग देते हैं और चयन मानदंडों के आधार पर उपयुक्त मजदूरों की पहचान करते हैं, और काम की शर्तों पर उन कामगारों के बदले खुद बातचीत करते हैं। (iii) ऑन-डिमांड प्लेटफॉर्म, या कंपनियां, जो सेवा या 'असंगठित (गिग्स)' क्षेत्र में काम देती हैं, होती हैं। जैसे कि एक घंटे के आधार पर सफाई, श्रमिकों के रोस्टर द्वारा किया जाता है जिन्हें 'स्वतंत्र ठेकेदारों' के रूप में जाना जाता है।

जब रोजगार संबंधों को निर्धारित करने में इन प्लेटफार्मों द्वारा निभाई गई भूमिका की बात आती है, तो प्लेटफॉर्म वर्गों के भीतर और उनके बीच व्यापक अंतर होता है। हस्तक्षेप के कमजोर और मजबूत दोनों मॉडल देखने को मिलते हैं। सभी तरह के कंपनियों को एक पैमाने पर रखा जाए तो इसके एक छोर पर काम दिलवाने की प्रक्रिया में न्यूनतम हस्तक्षेप के साथ बाजार हैं, और दूसरे माँग-आधारित प्लेटफॉर्म हैं, जो काम के प्रत्येक पहलू पर सटीक नियंत्रण रखते हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म घरेलू कार्य क्षेत्र में बिचौलियों की अवधारणा को पुनः परिभाषित करते हैं, और अगली पीढ़ी की प्लेसमेंट एजेंसियों के रूप में कार्य करते हैं। सभी तीन प्लेटफॉर्म प्रकारों में ऐसे पहलू होते हैं जो मजदूरों को संस्थान से जुड़ाव प्रदान करते हैं, साथ ही वे मजदूरों की कम महत्ता की उनकी स्थिति को बदलकर मजबूत करते हैं। प्लेटफॉर्म का स्वरूप कार्य की परिस्थितियों को निर्धारित करने में प्लेटफॉर्म की भूमिका को प्रभावित करता है, लेकिन इसे पूरी तरह से निर्धारित नहीं करता है।

(पुनः) काम की शर्तों को आकार देना

तीनों प्रकार के प्लेटफार्मों में, प्लेटफॉर्म से बाहर काम करने वाले मजदूरों की तुलना में मजदूरी थोड़ी अधिक है या मेल खाती है। कुछ बाजार प्लेटफार्मों ने ग्राहकों द्वारा मजदूरी की उच्च दर निर्धारित करने के लिए प्रेरित करने वाली सुविधाओं को शामिल किया है, जैसे न्यूनतम मजदूरी मानकों को लागू करना, या ग्राहकों को उनके इलाके में न्यूनतम मजदूरी के बारे में सूचित करना।

इसके विपरीत, माँग आधारित प्लेटफॉर्म कर्मचारियों को कर्मचारियों के रूप में मान्यता देने से इनकार करने के साथ, मजदूरों से उच्च दर का कमीशन लेते हैं। यह देखते हुए कि मजदूर काम के लिए अपनी शर्तें या मजदूरी निर्धारित करने में असमर्थ हैं, इससे पता चलता है कि यह रोजगार-संबंध का एक गलत वर्गीकरण है। कमीशन की उच्च दर और प्लेटफार्मों द्वारा श्रम के समायोजन के बावजूद, माँग-आधारित मजदूर अन्य प्लेटफार्मों के मजदूरों की तुलना में अधिक मजदूरी कमाते हैं। अपेक्षाकृत उच्च वेतन का परिणाम है कि माँग-आधारित सफाई कार्य अधिक पेशेवर होता है और दिन-प्रतिदिन की जाने वाली सफाई कार्य की तुलना में अधिक कार्यकुशलता की जरूरत होती है।

इस क्षेत्र में कार्य, लिंग और जाति के आधार पर बांटे जाते हैं, जैसा कि ऐतिहासिक रूप से होता रहा है। दलित, बहुजन और आदिवासी महिलाओं को बर्तन साफ करने और धोने जैसे काम मिलने की अधिक संभावना होती है, जबकि सभी जातियों में पुरुषों और महिलाओं को खाना पकाने के काम समान रूप से मिल जाता है। पारंपरिक अर्थव्यवस्था की तरह बुजुर्गों और बच्चों की देखभाल जैसे कार्यों पर महिलाएं सर्वाधिक हैं। मजदूर पेशेवर कार्यों में जैसे, गहरी सफाई जिसमें तकनीकी उपकरणों और रसायनों की आवश्यकता होती है, लगभग पूरी तरह से पुरुष द्वारा होते हैं।

डिजिटल विभाजन और मजदूर संस्थाएँ

हम पाते हैं कि मजदूर मुख्य रूप से प्लेटफॉर्म के बारे में अन्य मजदूरों से सीखकर प्लेटफॉर्म पर अपना पंजीकरण करते हैं। इसके अलावा प्लेटफॉर्म द्वारा लगाए गए शिविरों में जाकर या प्लेटफॉर्म द्वारा ऑफ़लाइन विज्ञापन के माध्यम से। इस तरह की व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होकर की जाने वाली पंजीकरण की तकनीक बिना डिजिटल पहुँच या साक्षरता वाले श्रमिकों को भी बाजार प्लेटफॉर्म और डिजिटल नियोक्ता संस्थाओं पर खुद को पंजीकृत करने की अनुमति देती है।

हालांकि, हम पाते हैं कि शिक्षा और डिजिटल साक्षरता के निम्न स्तर ने श्रमिकों और प्लेटफार्मों के बीच एक मजबूत प्रतीकात्मक विषमता पैदा करके प्लेटफॉर्म-आधारित श्रम को प्रभावित करना जारी रखा है। उदाहरण के लिए, हम पाते हैं कि कम आय वाले समुदायों की महिला मजदूरों को इस बारे में बहुत कम जानकारी है कि प्लेटफॉर्म कैसे काम करते हैं, जिससे गहरा अविश्वास पैदा होता है। डिजिटल उपकरणों और साक्षरता (-और इसलिए प्लेटफॉर्म की कार्यक्षमता की अपेक्षाकृत बेहतर समझ-), भौतिक गतिशीलता और अप्रत्यक्ष रूप से लगने वाले लागतों को वहन करने वाले संसाधनों के साथ वाले मजदूरों को बेहतर भुगतान वाली नौकरियों को खोजने में एक महत्वपूर्ण लाभ रहता है। वे श्रमिक जो लचीलेपन की मांग कर रहे थे और जरूरी नहीं कि अपनी प्राथमिक आय के लिए सिर्फ प्लेटफार्म पर निर्भर थे, वे प्लेटफॉर्म पर पूरी तरह से निर्भर लोगों की तुलना में बेहतर थे। इन सभी मामलों में महिला कामगारों को हानि ही हुआ, यह स्थिति उनकी एजेंसी और प्लेटफॉर्म अर्थव्यवस्था के लाभों को प्राप्त करने की क्षमता को कम कर दिया।

तीनों प्रकार के प्लेटफार्मों में, काम मिलने और रेटिंग की प्रणाली असमान सूचना की समस्या को बढ़ाती है, क्योंकि मजदूरों को काम खोजने या बेहतर वेतन लेने की उनकी क्षमता पर रेटिंग के प्रभाव के बारे में उन्हें पता ही नहीं होता है। रेटिंग और स्वचालित चयन प्रणाली (फ़िल्टरिंग सिस्टम) भी मजदूरों के काम पर उनकी सामाजिक विशेषताओं के प्रभाव को और मुश्किल करते हैं। मजदूर अपने डेटा को नियंत्रित करने में असमर्थ हैं, और प्लेटफॉर्म और मालिकों की तुलना में अपने खुद को और कमजोर कर रहे हैं। हम श्रमिकों के अधिकारों की रक्षा के लिए सामूहिक समझौता संरचनाओं की स्पष्ट आवश्यकता की पहचान करते हैं, हालांकि प्लेटफॉर्म घरेलू कामगार घरेलू कार्य संघों और अन्य क्षेत्रों में प्लेटफॉर्म श्रमिकों के उभरते हुए यूनियन दोनों से दूर रहे हैं।

औपचारिकता के अन्तरवर्गीयता

हम पाते हैं कि इस क्षेत्र को ऐतिहासिक रूप से आकार देने वाली जाति, वर्ग और लिंग की गैर बराबरी को प्लेटफॉर्म अर्थव्यवस्था में दोहराया या बढ़ाया जा रहा है। जो स्पष्ट है वह यह है कि घरेलू कार्य क्षेत्र में प्लेटफॉर्म इस क्षेत्र के तर्क को अपनाते हैं, जबकि इसके विपरीत करना चाहिए। प्लेटफॉर्म इंजेशन को औपचारिकता के साथ जोड़ा जाता है, और इस रास्ते पर चलते हुए ही, पूरी अनौपचारिकता से लेकर कुछ हद तक की औपचारिकता तक, यह प्लेटफॉर्म संचालित होता है। श्रम लाभ, श्रम सुरक्षा या कल्याणकारी का हकदार नहीं बन पाता है जो औपचारिक प्रक्रियाओं का मुख्य कार्य है। इसके बजाय, तथाकथित लाभों का उद्देश्य घरेलू कामगारों को बदलना है, ताकि वे बाजार के तर्कों और अनिश्चितताओं में भाग ले सकें।

शोध सिफारिशें और नीति निर्माण के लिए सुझाव

इस परियोजना के डेटा संग्रह और विश्लेषण के आधार पर, हमने एक विशेष नीति पत्र (आगामी) तैयार किया जो इस शोध के पहुँच को दक्षिण एशियाई क्षेत्र में कवरेज करता है। इस काम को फ्रेडरिक-एबर्ट-स्टिचुंग (एफईएस) ने समर्थन दिया था। हमारे द्वारा सुझाए गए कुछ नीतिगत सुझाव नीचे दिए गए हैं।

घरेलू कामगारों के लिए श्रम-सुरक्षा के तरीकों को पहचानना और लागू करना:

घरेलू कामगारों ने सीमित कानूनी सुरक्षा के साथ ऐतिहासिक रूप से कार्यबल में सबसे कमजोर पदों पर रहे हैं। प्लेटफ़ॉर्म संचालित होने वाले नियामक का अस्पष्ट होने से इस क्षेत्र के घरेलू कामगारों को काम की दयनीय परिस्थितियों से दोगुना सामना करना पड़ता है। घरेलू काम को औपचारिक रूप देने की दिशा में एक स्पष्ट कदम के बावजूद, प्लेटफ़ॉर्म-बिचौलियों अनौपचारिक श्रम की विशेषताओं को बरकरार रखता है, और यहाँ तक कि कुछ को बढ़ाता भी है।

यदि ऐसा करने के लिए प्रेरित किया जाता है, तो प्लेटफ़ॉर्म कंपनियां कुछ कार्यान्वयन चुनौतियों को हल करने में सहायक हो सकती हैं, जिनको लागू करने में सरकारों ने कठिनाई का सामना किया है और घरेलू कामगारों को उपलब्ध कराए जाने वाले कानूनी सुरक्षा को लागू नहीं कर पाई हैं। प्लेटफ़ॉर्मों में मजदूरों के व्यक्तिगत सूचनाएँ होते हैं, जिनका उपयोग सरकार द्वारा दी जाने वाली सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के लिए उन्हें अनिवार्य रूप से पंजीकृत करने में किया जा सकता है। इस डेटा का उपयोग बेहतर नीति निर्माण के लिए भी किया जा सकता है, विशेष रूप से अनौपचारिक अर्थव्यवस्था में प्रवासी मजदूरों पर विश्वसनीय आंकड़ों के अभाव में।

रोजगार और स्वरोजगार के बीच सुरक्षात्मक अंतर को कम करना:

श्रम कानून ढांचे के भीतर "असंगठित (गिग)" काम का (गलत)वर्गीकरण अब भी एक ऐसा मामला है जिस पर नीति निर्माताओं, कानूनी विद्वानों और नागरिक समाज के कार्यकर्ताओं के बीच काफी बहस जारी है। तीन परिस्थितियों पर, विशेष रूप से, असंगठित मजदूरों को कर्मचारियों, स्वतंत्र ठेकेदारों, या तीसरी मध्यवर्ती श्रेणी के तौर माना जाता है। हाल ही में, कुछ कानूनी जीतें हुई हैं जो रोजगार सुरक्षा की गारंटी देती हैं और प्लेटफ़ॉर्म कंपनियों की जिम्मेदारियों को तय करती हैं। हालाँकि, ये सफलताएँ ग्लोबल नॉर्थ (विकसित) के देशों में अधिक दिखाई दे रही हैं।

रोजगार की स्थिति पर चल रही इन बहसों के समाधान के बावजूद, श्रम ढांचे के सभी श्रेणियों के मजदूरों को कुछ सार्वभौमिक सुरक्षा प्रदान की जानी चाहिए। इस तरह की सुरक्षा में संघ की स्वतंत्रता, सामूहिक समझौता, समान पारिश्रमिक और भेदभाव-विरोधी अधिकारों के अलावा सामाजिक सुरक्षा का सार्वभौमिक सुरक्षा शामिल होना चाहिए। इस उद्देश्य को प्राप्त करने की दिशा में तैयार नीतियां विभिन्न श्रेणियों के श्रम के बीच सुरक्षात्मक अंतरों को कम करने में महत्वपूर्ण होंगी, और विशेष रूप से श्रमिकों की ऐतिहासिक और उभरती व्यावसायिक श्रेणियों जैसे "असंगठित (गिग)" श्रमिकों और घरेलू श्रमिकों की मदद करेंगी।

घरेलू काम के उभरते प्लेटफॉर्म की विशिष्ट चुनौती (चुनौतियों) और क्षमता को

पहचानना:

प्लेटफॉर्म अनौपचारिक श्रम बाजारों में प्रभावी सुविधाकर्ता के रूप में कार्य करने की क्षमता रखते हैं। यहां तक कि जब वे मौजूदा भर्ती मार्गों को प्रतिस्थापित नहीं करते हैं, तब भी वे अन्य उपाय प्रदान करते हैं। मजदूरों को एक प्लेटफॉर्म पर पंजीकरण करने की अधिक संभावना थी यदि वे हाल ही में घरेलू कार्य श्रम बाजार में प्रवेश कर रहे थे (अक्सर संकट और प्रवास से प्रेरित), या अनौपचारिक, कहे-सुनाये-गए अनौपचारिक नेटवर्क के साथ सफल नहीं हो पाए। हालाँकि, प्लेटफॉर्म भी श्रम बाजार की असुरक्षा को बढ़ाते हैं, और नई असुरक्षाएँ पैदा करते हैं। इन संभावित जोखिमों को सामाजिक सुरक्षा, भेदभाव कानून और डेटा संरक्षण जैसे उपयुक्त ढांचे के माध्यम से विशेष रूप से पहचानने की आवश्यकता है।

प्लेटफ़ॉर्म मॉडल के लिए नीति-निर्माण:

हम तीन प्रकार के प्लेटफ़ॉर्म की पहचान करते हैं, जिनमें से प्रत्येक कार्य संबंध में अलग-अलग डिग्री में हस्तक्षेप करते हैं। हम अनुशंसा करते हैं कि डिजिटल प्लेसमेंट एजेंसियों और मार्केटप्लेस प्लेटफ़ॉर्म को सरकारों के साथ पंजीकृत किया जाए और मजदूरों के लिए न्यूनतम वेतन का प्रावधान, दुरुपयोग को रोकने (मजदूरी का भुगतान न करने सहित) और मानव तस्करी जैसी बुनियादी सुरक्षा लागू की जाए। दूसरी ओर मांग-आधारित कंपनियों को नियोक्ता के रूप में माना जाना चाहिए, और श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा सहित रोजगार सुरक्षा प्रदान की जानी चाहिए।

अधिकार-आधारित नीतिगत कार्रवाइयों के अलावा, प्लेटफ़ॉर्म-आधारित कार्य की अनिश्चितता को कम करने के लिए कानूनी-नियामक तंत्र की आवश्यकता है। यह मौजूदा कानूनी-नियामक को स्पष्ट और विस्तारित करना होगा कानूनी नियामक को तैयार करने के रूप में भी सकता है। इस तरह की नीति निर्माण में घरेलू कामगारों (और गिग वर्कर्स, आम तौर पर) और प्लेटफ़ॉर्मों के बीच शक्ति और सूचना गैरबराबरी एक विषय होना चाहिए।

इसके अलावा, स्वास्थ्य या सेवानिवृत्ति लाभों के अभाव में, जोखिम और संचालन की अप्रत्यक्ष लागत नियोक्ता से श्रमिकों को स्थानांतरित कर दी जाती है। उदाहरण के लिए, श्रमिक उपकरण या उपकरण के रूप में पूंजी प्रदान करते हैं, व्यापार और आय के उतार-चढ़ाव का समर्थन करते हैं, और खराब रेटिंग या निष्क्रियता की अवधि के परिणामस्वरूप किसी एप्लिकेशन से 'निष्क्रिय' किया जा सकता है। कर्मचारी की स्थिति का विस्तार करने के उद्देश्य से किसी भी विनियमन को ऐसी अप्रत्यक्ष लागतों का समर्थन करने के लिए प्लेटफ़ॉर्मों को अनिवार्य करना चाहिए।